ऑफ द ट्रैक

ऑटो स्केप का 'प्रतीक'

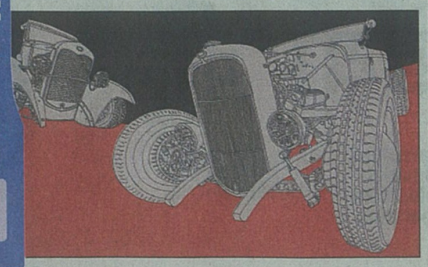

प्रतीक शर्मा (जन्म 1987) को बचपन से मोहाविष्ट करते रहे हैं ये मशीनी क्रियेचर जो जानवर न हो कर भी घोड़ों की तरह दौड़ते हैं। (यहां यह भी याद दिला दें कि मोटर के इंजिनों की शक्ति घोड़े की ताकत -हॉर्स पावर- से ही नापी जाती है) इसके ही वशीभूत हो कर बड़े होने पर उन्होंने कार-डिजाइनिंग का ही प्रशिक्षण चुना। सिंगापुर के राफेल्स डिजाइन इंस्टिट्यूट में सीखने के बाद न्यू यॉर्क जा कर भी उसी में महारत हासिल की। पर वंशगत जीन्स तो अपनी करामात दिखाते ही! नतीजा यह हुआ कि पेंटरों के ख्यात परिवार से होने के कारण, बजाय डिजाइनिंग के, प्रतीक ने कैनवस, ब्रश, रंग और पेन-इंक को अपना लिया और इस तरह कारें उमड़ने लगीं उनके चित्रों में। दादा का परिवार नाथद्वारा का प्रसिद्ध पिछवाई चित्रकारों का है और नाना भी धार्मिक चित्रों के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। पिता और मां, चरन और निमिषा शर्मा, समकालीन चित्रकला के चर्चित हस्ताक्षर हैं।

जैसे कि सदियों से चित्रकार घोड़ों को पेंट करते आ रहे हैं, प्रतीक ने सजीव घोड़ों की जगह मशीनी घोड़ों को चुना, जिनमें जैसे उन्होंने जान फूंक दी । शायद यह समय की मांग भी थी, जब मॉडर्निजम के बहाने कई अमेरिकी चित्रकार सूप के डिब्बे, जूते आदि मास प्रॉडक्ट पेंट कर रहे हैं, तो लाखों की तादाद में ही बनाई जाने वाली कारों को क्यों न चित्रों का विषय बनाया जाए! यह बहुत बारीक विभाजन रेखा है उपभोक्तावाद और रचनात्मकता के बीच की, जिसे उलांघ रहे हैं प्रतीक शर्मा अपने इस उपक्रम में। इन चित्रों में ड्राइंग सिंपल रेखाओं में है, पेन-इंक से और पृष्ठभूमि प्राइमरी रंगों में है। पृष्ठभूमि के इन रंगों का चुनाव कारों (या चित्रकार) की मनःस्थिति के अनुरूप किया गया है। चित्र में इन मशीनों का कंपोजिशन अमूर्तता के निकट है। खासकर इनकी हेडलाइट पर गौर करें तो उनमें यह शैली ज्यादा मुखर हुई है।

प्रतीक की कारें बेजान नहीं हैं, वे जीती-जागती हैं। अक्सर वे कैनवस पर इस तरह पेश होती हैं कि जैसे वे आपस में संवाद कर रही हों। एक कार का बोनेट खुला हुआ है और उसके कल-पुर्जे उसमें से झांक रहे हैं। वह थक गई है बेचारी चलते-दौड़ते! सुस्ता रही है दम भर। दो कारें हमजोलियों की तरह आपस में जैसे बतिया रही हैं। ऐसे कई 'दृश्य' हैं इन पेंटिंग्स में जहां कारें जीवंत हो उठी हैं। ये आपसे और आप उनसे बातें कर सकते हैं। 'मोटरस्केप' शीर्षक इस शो में चित्रों के विषय सिर्फ कारें ही नहीं हैं, बल्कि मोटर साइकिल भी हैं। मर्सिडीज़, ऑडी जैसी प्रसिद्ध कारों के अलावा कुछ विंटेज कारें भी कैनवस पर हैं, जो अब इतिहास की वस्तु हो गई हैं। यह प्रतीक की दूसरी एकल प्रदर्शनी है, जो अब काला घोड़ा स्थित 'हीरजी जहांगीर गैलरी' में हो रही है। पहले वे जुहू के होटेल जे.डबल्यू.मैरियेट में एक शो कर चुके हैं तथा देश-विदेश के कई ग्रुप शो और आर्ट कैंपों में शिरकत कर चुके हैं। यह प्रदर्शनी हीरजी के बाद लायंस गेट स्थित 'गैलरी बियॉन्ड' में जाएगी। इसी वर्ष उनका काम न्यू यॉर्क में होने वाले आर्ट फेयर में भी प्रदर्शित होगा।

अब प्रतीक शर्मा तो प्रतीक ही बन गये हैं मोटरों के। प्रतीक का कहना है,'ये कारें नहीं हैं, मेरे लिए ये अलग-अलग मनःस्थिति वाले व्यक्ति हैं। कोई गर्व से सिर उठाए है, तो कोई गंभीर है, तो कोई शांत है। कारें मुझे हमेशा से मोहित करती रही हैं, पर अब मुझे इन्हें पेंट करने में ज्यादा मजा आता है। मुझे लगता है, जैसे चित्र बनाते वक्त मैं ड्राइविंग सीट पर हूं ।'

● मनमोहन सरल